द्वितीय तराइन युद्ध के परिणाम

तराइन की द्वितीय युद्ध की गणना भारत के निर्णयात्मक युद्धों में की जाती है। डॉ० डी० सी० गांगुली के शब्दों में "तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय से न केवल चौहानों की साम्राज्यवादी शक्ति नष्ट हुई, बल्कि सम्पूर्ण भारत के विनाश का कारण बन गया। तराइन की पराजय से भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना का द्वार खुल गया। वी० ए० स्मिथ ने लिखा है, "तराइन के निर्णायक युद्ध ने उत्तरी भारत में मुस्लिम साम्राज्य की नींव डाल दी। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के शब्दों में, "पृथ्वीराज की पराजय से राजपूत शक्ति को ऐसी क्षति पहुँची जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती थी। इससे भारतीय समाज के समस्त अंगों का नैतिक पतन प्रारम्भ हो गया और अब राजपूतों में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं रह गया जो समस्त सहयोगी राजाओं को अपने पथ-प्रदर्शन में संगठित कर मुसलमानों का सामना करता।" अजमेर पर अधिकार कर मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज के एक पुत्र को वहाँ का शासन सौंप दिया था। गोविन्दराय के पुत्र को दिल्ली का अधिकारी नियुक्त किया गया। इस व्यवस्था से हिन्दुओं की भावना को सन्तुष्ट करने की चेष्टा मुहम्मद गोरी ने की थी। विजय के बाद हिन्दू मन्दिरों को नष्ट कर —

P.T.O

मस्जिदें खड़ी की गयी। इस्लाम को राजधर्म घोषित किया गया और विग्रहराज के प्रसिद्ध विद्यालय को मस्जिद में बदल दिया गया।

इस प्रकार तराइन के युद्ध का परिणाम भारतीय इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुआ। तराइन के युद्ध ने चौहान वंश की शक्ति को नष्ट कर दिया और भविष्य में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना सरल हो गयी।